



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi  
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade  
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi  
<https://egangotri.wordpress.com/>

Checked 2012

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक  
हस्तालिखित संग्रह

दाखल क्र M 668 विषय शास्त्रोन्मात्रा  
नाव. शास्त्रोन्मात्रा (वेदविद्या संग्रह)  
लेखक/लिपीकार — M&S  
पृष्ठ 3 काठ — पूर्ण/अपूर्ण

१३. ॥श्रीरामचंद्रायनमः॥ अंनमोभगवते श्रीहनुमते महाबलप  
 सक्रमाय महाविपत्तिनिवारकाय भक्तजनमनः कल्पदुमा कलना ३  
 यदुष्टजनमनोरथमंजकाय प्रभंजनप्राणप्रियाय ॥ अथ  
 धानं॥ श्रीमंतं हनुमंतमार्त्तिरिषुभिद्वमज्जरुधाजितं वत्त्वा  
 द्वालधिवध्वैरिनिचयं चामीकरादिप्रभं रोषारक्षिष्ठंग  
 नेत्रनलिनं भूभंगसंगमुरत्योद्यम्बुद्मयूर्खमंडलमुखंदुः  
 खापहंदुः खिनाम् ॥ १० कापीनकटिसूत्रमोज्ज्वजिनयुद्धे  
 हं विदेहात्मजाप्राणधीषापदारविंदनिहितं स्वातं शतातं ॥ १३.

द्विषां॥ ध्यात्वैवं समरोग्नाणस्थितप्रशानीयखहृत्यं कजेसंपूर्ण  
 ज्याखिलपूजनोक्तविद्धिनासंप्रार्थयेत्प्रार्थितं ॥ २ ॥ अं  
 न्नमन्तं जनीसूनो महाद्वयं पराक्रम ॥ लोललांगूलपातेनम  
 मारातीन्निपातय ॥ १ ॥ मर्कटाद्यप्रमार्त्तिरुमंडलयासका  
 रक ॥ लोढी ॥ अक्षक्षपनपिंगाक्षदितिजासुक्षयंकर ॥ लो  
 ० ॥ ३ ॥ रुद्रावतारसंसारदुःखभासपहारक ॥ लो०४ ॥ श्री  
 रामचरणामोजमधुपायितमानस ॥ लो०५ ॥ वालिकाल  
 रुदाक्रोतसुग्रीवोन्मोचनप्रमो ॥ लो०६ ॥ सीता विरहवा  
 रीषामस्त्रसीते शतारक ॥ लो०७ ॥ ऋक्षजेरोपतापाग्नि

श.२  
भे

दहुंमानगैजेगद्वन् ॥ लो०८॥ यस्तारोषजगत्सास्थ्यराद्धे  
संधिमंदर॥ लो०८॥ एकगुक्सुरद्धमानलदग्धारिप  
तेन॥ लो०९॥ जगन्मनोदरत्त्वध्यपारवारविलंघन॥०  
लो०१॥ स्मृतिमात्रसम्मेषपूरकप्रणातप्रिय॥ लो०१॥  
राविंचरचम् राविकर्त्तनैकविकर्त्तन॥ लो०१॥ जानकी  
जानकीजानिष्वेमपात्रारंतप॥ लो०१॥ भीमादिकम  
हावीरवीरावेशावत्तर्क॥ लो०१॥ वैरहिंविरहाकात  
रामरोषेकविश्वह॥ लो०१॥ वज्रांगनखदंष्ट्रेपावज्रीव  
ज्ञावकुंठन॥ लो०१॥ ग्रीववेगवर्जनधर्वपर्वतोद्देदनस्तर

४२

लो०१॥ लक्ष्मणप्राणसंग्रामाततीक्ष्णकरान्वय॥ लो०  
१॥ रामारिविप्रयोगार्त्तसरताद्यात्तिनाशन॥ लो०२॥ इत्या  
चलसमुन्दर्क्षेपसमुद्दीप्तिरिवेमव॥ लो०२॥ सीतापूरीर्व  
दसंपन्नस्त्रमस्त्रावयवाक्षेत॥ लो०२॥ इत्येवमस्त्रात्यत्तें  
पविष्टः प्रातुं जयनामपेत्सवंयः॥ सप्रीघमेवास्त्रसमस्त्र  
प्रातुः प्रमोदतेमारुतजः प्रसादात्॥ २३॥ इति श्रीसुरदर्श  
नसंहितायां पूर्वखंडे प्रातुं जयनामहनुमत्सत्तात्रैसमात्तं  
स्त्रथसंकल्पः॥ अँतेत्सत्रश्रद्धासुकमासैस्त्रमुकपथेश्वरुक

श-३

तिथ्या अमुकवासे अमुकपर्मणः मम पात्रपराजयकामन  
यामहाबीरप्रीतिहेतवे अयुतसंख्याकश्चुंजयस्तोत्रं अ  
सतिवाधके यथा सख्याप्रत्यहं पाठमहं करिष्ये ॥ इति सं  
कल्पः ॥ रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम

हृ

[OrderDescription]

,CREATED=16.09.19 15:47

,TRANSFERRED=2019/09/16 at 15:48:57

,PAGES=4

,TYPE=STD

,NAME=S0001846

,Book Name=M-668-SHATRUNJAY STROTAM HANUMAN STROTAM

,ORDER\_TEXT=

,[PAGELIST]

,FILE1=00000001.TIF

,FILE2=00000002.TIF

,FILE3=00000003.TIF

,FILE4=00000004.TIF

,